IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, March 2023
Impact Factor: 7.301

भारतीय समाज में महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का अध्ययन (रीवा शहर के विशेष सन्दर्भ में)

Dr. Madhulika Shrivastava
Professor, Department of Sociology
Government Thakur Ranmat Singh College, Rewa, (M.P), India

सारांश

इतिहास से लेकर आज के आधुनिक युक तक अगर नजर डाले तो भारतीय समाज में स्त्रियों को योगदान पुरूषों के मुकबले कम नहीं है बदले समय के साथ–साथ स्त्रियों नें भी पुरूषों के समाज ही हर क्षेत्र में तरक्की की है। जिस पर कभी पुरूषों का वर्चस्व हुआ करता था जैसे राजनीतिक प्रशासनिक सेवायें कॉपरेट खेल इत्यादि सभी क्षेत्रों मे स्त्रियों की अच्छी कार्य क्षमता एवं बुद्धिमता के प्रर्दशन को नकारा नही जा सकता। लेकिन आज भी हमारे समाज में स्त्रियां असुरक्षित महसूस करती है। उन्हे अत्याचार और शोषण का शिकार होना पडता है। वैसे तो सरकार ने महिला आयोग जैसे संस्थाओं का निर्माण कर रखा है। पर सभी के लिये उसका लाभ उठा पाना सम्भव नही हो पाता क्योकि महिलाओं के लिये बने कानून एवं अधिकारो की जानकारी का आभाव भी इसका मुख्य कारण है।

मुख्य शब्दः– समाज, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति, महिलायें परिवर्तन।

प्रस्तावनाः–

वर्तमान युग में हमकों कितने भी विकसित एवं शिक्षित समाज का हिस्सा मानते है। परन्तु हमारी मानसीकता अभी भी महिलाओ प्रति पक्षपात पूर्ण है। आखिर नारी को समानता का दर्जा देने में झिझक क्यों? भारतीय समाज में कामकाजी महिलाओं को अपने कामकाज के अतिरिक्त घरेलू कार्यो के लिए भी पूरी मशक्कत करनी पडती है। क्योकि पुरूष प्रधान समाज होने के कारण पुरूष घरेलू कार्यो को करने से परहेज करता है। ससांर में जितने भी जीव जन्तु है उनमें सिर्फ मानव जाति की मादा (नारी) बच्चों की देख रेख के अतिरिक्त जो अन्य जीव भी करते है, पूरे परिवार एवं पति की स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं के साथ–साथ अन्य सभी घरेलू कार्यो मे भी सहयोग करती है। महिलाओं का समाज के प्रति अविश्वास होना उनके उत्थान के लिये प्रतिरोधक बन सकता है किसी भी देश प्रदेश समाज या परिवार को विकसित करने में महिला का अहम योगदान होता है। यह बात उपायुक्त एम एल कौशिक ने स्थानीय बाल भवन में भारतीय ग्रामीण महिला संघ की ओर से आयोजित महिला उत्थान दिवस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करने के बाद कही। उन्होने कहा कि सामाजिक जीवन में नारी मॉ, बहन, पत्नी बेटी के रूप में होती है, इसलिये हमें इन सबका आदर करना चाहिये। समाज के उत्थान का होना जरूरी है।

आज के आधुनिक युग में भी लोगों से पूछना चाहती है यदि समाज में बेटियां पैदा नहीं होंगी तो यह संसार कैसे आगे बढेगा। उपायुक्त ने कहा कि पुराने समाज में भी झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, जीजाबाई जैसी महान महिलाओं ने नई दिशा दी थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अनिश्ति उपायुक्त राजनारायण कौशिक ने कहा कि वर्तमान युग में महिलाओं का काफी उत्थान हुआ है। उन्होने कहा कि जिस घर में नारी की पूजा की जाती है। वंहा देवता निवास करते है।

भारत के विकास ने महिला साक्षरता का बहुत बडा योगदान है। इस बात का नाकारा नही जा सकता कि पिछले कुछ दशकों से जब महिला साक्षारता में वृद्धि होती आई है। भारत विकाश के पथ पर अग्रेसर हुआ है। इसने न केवल मानव सांसधन के अवसर में वृद्धि की है। बल्कि घर के आगन से ऑफिस के कैरीडोर के कामगाज और वातावरण में भी बदलाव आया है। महिलाओं के शिक्षित होने से न केवल महिला शिक्षा को बढवा मिला बल्कि बच्चों के सर्वागीण विकाश में भी तेजी आई है। महिला साक्षात्कार से एक बात और सामने आई है कि इससे शिशु मृत्यु दर में गिरावट आ रही है और जनसंख्या नियंत्रण को भी बढ़ावा मिल रहा है। हालांकि हसमें और प्रगति और गुजांइश है। स्त्री–पुरूष समानता के लिये जागरूकता जरूरी है। निःसंदेह अंग्रेजो का शासन बहुत बुरा था, लेकिन महिलाओं की स्थिति में जो मौलिक बदलाव आए वो भी इसी जमाने में जाए। कम से कम प्राचीन भारतीय संस्कृति में तो महिला की इज्जत थी ही। मुगलों और उससे आक्रमणकारी लुटेरों के शासन के साथ ही उनकी दशा में गिरावट आई।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, March 2023
Impact Factor: 7.301

शोध का उद्देश्यः–

1. भारतीय समाज में महिलाओं की साक्षरता दर का अध्ययन करना।
2. जीवन प्रत्याशा ज्ञात करना।
3. भारतीय समाज में महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
4. भारतीय समाज में महिलाओं के राजनैतिक आर्थिक सामाजिक विकाश का अध्ययन करना।
5. भारतीय समाज में कामकाजी महिलाओं की स्थिति भी सुखद नही है क्योंकि कामकाजी महिलाओं को अपने कामकाज के अतिरिक्त घरेलू कार्यो के लिये भी मशक्कत करनी पड़ती है इसका अध्ययन करना।

निदर्शन पद्धतिः– अध्ययन को स्वरूप देने के लिये उद्देश्य पर निर्देशन के अन्तर्गत रीवा शहर का चयन किया गया। रीवा शहर के शहरी इलाकों में रह रहे महिलाओं का चयन निर्देशन के माध्यम से किया गया है।

शोध उपकरणः

- **प्रश्नावलीः** अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए रीवा में शहरी क्षेत्रों में निवास कर रही महिलाओं से प्रश्नावली के माध्यम से उनकी राय और विचारों को जानने के प्रयास किया गया है तथ्य संकलन के लिए प्रश्नावली को उपयोग किया गया है। जिसके माध्यम से प्रतिभागियों के विचारों को भी शोध में शामिल किया गया है।
- **अनुसूचीः** कुछ प्रतिभागियों को प्रश्नावली समझने में समस्या होने के कारण उनसे राय और विचार जानने के लिए प्रश्नावली का उपयोग यहॉ अनुसूची के रूप में भी किया गया है।

तथ्य विश्लेषण एवं आंकड़ों का प्रस्तुतिकरण–

प्रस्तुत शोध में अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि महिलाओं की स्थिति, इसकी लोकप्रियता और कार्य पद्धति को केन्द्र में रखकर यह शोध कार्य किया गया है तथ्यों और आंकड़ों को प्रश्नावली, अनुसूची के माध्यम से एकत्रित कर उनका विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध रीवा शहरी क्षेत्र में रहने वाले महिलाओं पर विशेष रूप से केन्द्रित है। अध्ययन में महिलाओं को शामिल किया गया है। जिनमें विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई है। तथ्य संकलन हेतु पचास प्रश्नावली, अनुसूची को भरवाया गया है। तथ्य विश्लेषण में पचास प्रतिभागियों के मतो को शामिल किया गया है।

साक्षात्कार अनुसूची में कुल 03 प्रश्नो को शामिल किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची में बहुविकल्पीय प्रश्नों के माध्यम से प्राप्त तथ्यों को अध्ययन हेतु केन्द्र में रखा गया है। साक्षात्कार अनुसूची में विकल्प के रूप में हॉ, नहीं और पता नही को तथ्य संकलन हेतु आधार बनाया गया है। जो इस प्रकार है।

तालिका कमांक 1: क्या भारतीय समाज में महिलाओं को शासन द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ मिल रहा है।

क.	महिलाएं	न्यादर्शो की संख्या	संख्या	प्रतिशत
1	हॉ	50	25	50
2	नहीं	50	20	40
3	पता नहीं	50	05	10
	योग–	50	50	100

उक्त तालिका से ज्ञात होता है कि रीवा शहर के क्या महिलाओं को शासन द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ मिल रहा है में कुल न्यादर्शो की संख्या 50 में से 25 (50 प्रतिशत) उत्तरदाओं ने कहा कि शासन द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ मिल रहा है। 20 (40 प्रतिशत) उत्तरदाओं ने कहा कि शासन की योजनाओं का लाभ नही मिल रहा है। 05 (10 प्रतिशत) उत्तरदाओं ने कहा ज्ञात नहीं हैं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, March 2023
Impact Factor: 7.301

तालिका क्रमांक–2: वर्तमान में महिलाओं का आर्थिक विकास व सामाजिक विकास हो रहा है।

क्र.	महिलाएँ	न्यादर्शो की संख्या	संख्या	प्रतिशत
1	हॉ	50	27	54
2.	नहीं	50	15	30
3.	पता नहीं	50	8	16
	योग–	50	50	100

उक्त तालिका से ज्ञात होता है कि रीवा शहर में महिलाओं का आर्थिक विकाश व समाजिक विकाश हो रहा है। में कुल न्यादर्शो संख्या 50 में से 27 (54 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि महिलाओं का आर्थिक एवं सामाजिक विकाश हो रहा है। 15 (30 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि महिलाओं का आर्थिक एवं सामाजिक विकास नही हो रहा है। 8 (16 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा पता नही है।

तालिका क्रमांक–3: महिलाओं की साक्षारता दर में वृद्धि हो रही है।

क्र.	महिला नागरिक	न्यादर्शो की संख्या	संख्या	प्रतिशत
1	हॉ	50	33	66
2.	नहीं	50	10	20
3.	पता नहीं	50	07	14
	योग–	50	50	100

उक्त तालिका से ज्ञात होता है कि रीवा शहर में मलिाओं की साक्षारता दर में वृद्धि हो रही है। में कुल न्यादर्शो की संख्या 50 में से 33 (66 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि साक्षारता दर में वृद्धि हो रही है। तथा 10 (20 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि महिलाओं की साक्षारता दर में वृद्धि नहीं हो रही है। जबकि 07 (14 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि पता नहीं है।

निष्कर्ष:

आज नारी जीवन के हर क्षेत्र में कदम बढा रही है। आज की नारी अपने कर्तव्यों को गृहकार्यो की इतिश्री ही नहीं समझती है, अपितु अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति भी सजग है। वह अब स्वयं के प्रति सचेत होते हुए अपने अधिकारों के प्रति आवाज उठाने की हिम्मत रखती है। कोई सिर्फ यह कहकर उनके आत्मविश्वास को तनिक भी नहीं हिला सकता कि वह एक नारी है। शिक्षा के चलते नारी जागरूक हुई और इस जागरूकता ने नारी के कार्यक्षेत्र की सीमा को घर की चारदीवारी से बाहर की दुनिया तक फैला दिया। शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के चलते आज नारी भी अपने कैरियर के प्रति संजीदा है। इससे जहां नारी अपने पैरों पर खडी हो सकी, वहीं आर्थिक आत्मनिर्भरता ने उसे रचनात्मक कार्यो हेतु भी प्रेरित किया। आज एक महिला की ड्यूटी मानकर निश्चित हो जाता है। यह उस स्थिति में भी है जबकि महिला कमा रही होती हैं। आज जगरूकता इस बात की भी है कि जी.डी.पी. में महिलाओं के कार्य की गणना हो और घरेलू कार्यो को हवा में न उड़ाया जाये। इस अवधारणा को बदलने की जरूरत है कि बच्चों का लालन–पोषण और गृहस्थी चलाना सिर्फ नारी का काम है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. भारत सरकार, आर्थिक समीक्षा 2020–21।
2. दोषी, एस0एल0 एवं जैन पी0सी0 (2007) भारतीय समाज में नारी, भारतीय समाज, सरंचना एवं परिवर्तन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस जयपुर पू0सं0 322–337।
3. पाठक ए, (1998) इंडियन माडर्निटी, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस न्यू देहली।
4. अग्रवाल एन. (1983) वीमेन स्टडी इन एशिया एण्ड पेसिफिक–ऐन ओवरव्यू ऑव करेंट स्टेंटट एण्ड नीडेड प्रियारिटीज एपीडीसी।
5. श्री भदगवदगीता, गीता–प्रेस, गोरखपुर।